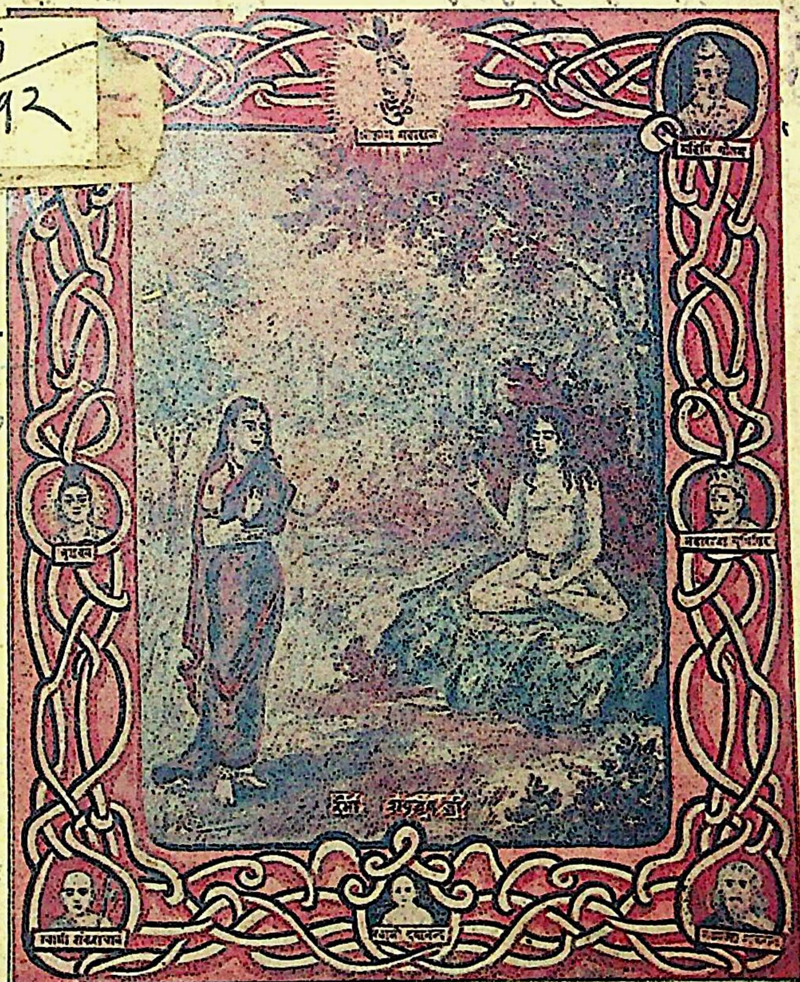
काशीमाहात्म्य पंचक्रोशी यात्रा सहित।



प्र०—गुल्लूप्रसाद केदारनाथ बुक्सेलर, कचौड़ीगली, बनारस सिटी। मूल्य ~)



* श्रीः *

ॐ नमः शिवाय ।

॥ श्री काशी माहात्म्य भाषा ॥

एक समय में नर्मदा नदी के तटपर आनन्द पूर्वक बैठे हुए भृगु मुनि से लोमशादि ऋषियों ने श्री काशी क्षेत्र का माहात्म्य पूछा तब सहर्ष भृगु मुनि ने वर्णन किया कि हे मुनि श्रेष्ठ ! श्री काशी यह धाम अति उत्तम है कि जहांपर श्री विश्वनाथ यह आदिलिंग शिवजी का स्थित है कि जिसके प्रभाव से काशी जी में पापात्मा कोई भी जीव शरीर को त्यागता है उसको निसन्देह मुक्ति पदवी प्राप्त होती है । काशी यह शब्द उच्चारण करने वाले पुरुष के पापरूपी पहाड़ नाश होकर ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान के प्राप्त होने से उसे मोक्ष अवश्य मिलता है धन्य है वह पुरुष लो निरन्तर काशीधाम में बास करते हैं । हे मुनि ! काशीपुरी का माहात्म्य मैं कहां तक वर्णन करूं कि सतयुग में अति शूरबीर भुरिद्युम्न नामक राजा राज्य करता था

कि जिसकी शहस्रों रानियों में विभावरी नामक मुख्य रानी थी दैववश कामदेव के वशीभूत होने के कारण समस्त राज्य को शत्रुओं ने निज वशमें कर लिया और राजा भूरिद्युम्न विभावरी रानी को साथ लेकर तरवार लिये भयानक विन्ध्य पर्वत पर चला गया। कुछ समय के बाद एक दिन राजा और रानी की परस्पर वार्तालाप में रानी ने कहा कि हे राजन्! आप कामदेव के बश होकर निज राज्य और अन्य स्त्रियों को खो दिया अब हम और आप से इस निर्जन बन में कैसे रहा जायगा जिस पुरुष ने धर्म अर्थ को त्याग कर काम ही के बस में रहता है उसकी आपही की सी गति होती है। बाद वह राजा रानी क्षुधा पियास से ब्याकुल हो निज कर्म का स्मरण करता हुआ घूमने लगा। एक रोज क्षुधा से पीड़ित राजा के मन में पाप आया कि मैं निजरानी को ही मारकर खा जाऊं। रानी को यह बात मालूम हुई तो रानी ने कहा कि हे महाराज!

आपका मुख कमल क्षुधा से पीड़ित है अब मेरे शरीर से आप मांस निकाल कर भोजन कीजिये और निज प्राणों को बचाइये। यह नीति के बचन सुनकर उस घोर पापी राजाने रानी को मारकरज्यों ही मांस खाने को बैठा त्यों ही दो सिंह आपस में खेलते हुए वहां पर आये। सिंह को देख कर वह राजा भाग खड़ा हुआ और चार कोशकी दुरीपर धान के बोझा को लिये हुए चार ब्राह्मणों को देख कर राजा ने उन्हें मार कर धान खाने को ज्यों ही उद्यत हुआ त्योंही यज्ञोपवीत और मृग चर्म को देखा तो राजा को दैववश ज्ञान हुआ कि मैंने निज कुबुद्धि से स्त्री और ब्राह्मणों का मारकर एक ब्रह्म हत्यासे मनुष्यको सौ कल्प नर्कमें बास करना पड़ताहै और स्त्री के बधसे उक्त पचास कल्प। अहो ! मैंने महाभारी घोर पाप किया यह बिचार करता हुआ राजा भूरिद्युम्न सालंकयन मुनि के स्थान में आकर समस्त निज कथा को सुनाया और प्रायश्चित

पूछा। तब दया भावसे मुनि ने कहा कि अरे दुष्ट अब तू काशी जा इसके निश्चय के लिये पांच काले कपड़े तू पहन ले सो काशी के दर्शनमात्र से सब सफेद हो जायँगे। यह सुन भूरिद्युम्न सात दिन में चलकर समस्त जीवोंके भयको नाश करने वाला काशी को पहुँचा सो श्री काशी के दर्शन मात्रसे उसके पांचों कपड़े शरद ऋतु के सदृश उज्वल चन्द्रवत सफेद हो गये और वह घोर पापी काशी में नित्य श्रीगंगास्नान और श्री विश्वेश्वर का दर्शन पूजन करने लगा सदैव शिवशिव तथा "हरहर महादेव शम्भो काशी बिश्वनाथ गंगा" ऐसा मंत्र उचारण करके श्री विश्वनाथ मणिकर्णिका के दर्शन पूजन करने से और ताड़क मंत्र के प्रभाव से इस क्षेत्र में शिव सारुप्यमुक्तिको प्राप्त हुआ। इस से हे मुनिवर्य! काशीमें किसी जगह कैसा ही घोर पापी शरीर त्यागता है उसे अवश्य ही मोक्ष प्राप्त

होता है वो धर्मात्माओं की गतिको कहना ही क्या है

इति प्रथमोऽध्यायः।

हे लोमशादि मुनियों ! एक समय कुरुक्षेत्र में भालक मुनि का कृपा नामक पुत्र था। उसको पिङ्गल मुनि और भालक मुनि ने अनेक भांति से शिक्षा दिया परन्तु उस पापी को कुछ भी ज्ञान न प्राप्त हुआ और युवावस्था को प्राप्त होते ही निज सौतेली माता और गुरु की स्त्री को लेकर मथुरा में आय चोरी की वृत्ति निजजीविका को करता हुआ उक्त स्त्रियों में बिहार करने लगा कामवन्त मदिरा से उन्मत्त बारह बरस माता और गुरु पत्नी के संग बिहार किया। बाद कालवश उक्त स्त्रियां मर गईं और वह दुखी कृश शुकर्ला जंगल में घूमने लगा और कुछ काल के बाद काशी काशी यह शब्द उच्चारण करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हुआ तो वह काशी इन दो अक्षरों के उच्चारण के प्रभाव से शंकर के दूतों ने यमदूतों को मार कर कैलाश में

स्थित किया और उसे कैलाशबाश दिया ! शिवजी का भक्त, विष्णुभक्त तीर्थ सेवी, काशीबाशी मरने के समय काशी शब्द उच्चारण करने वाले के घोर से घोर पाप नाश होकर उसे उत्तम गति प्राप्ति होती है।

इतिद्वितीयोऽध्यायः।

भृगु मुनि ने कहा कि हे ऋषियों ! जिस काशी में पतितोद्धारिणी श्री गंगाजी और मणिकर्णिका कुण्ड श्री साक्षात् आदि शिवलिंग विश्वनाथजी विराजमान हैं उस काशी के माहात्म्य को मैं क्या कह सकता हूं जिस पुरुष ने काशी में बस करके कोई पाप कर्म किया उसको तीन हजार वर्ष रुद्र-पिशाच होना पड़ता है इसलिये काशीमें रहकर सदैव धर्म का आचरण करे श्री विश्वनाथ जी काशी में रहते हुए समस्त जीवों को ताड़क मंत्र का उपदेश करते हैं जिसके प्रताप से वह अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त होता है। एक समय सरस्वती नदी के किनारे वशिष्ठजी के पास बामदेव मुनि आये और परस्पर

वार्तालाप होते हुए श्रीकाशीधाम के माहात्म्य को बामदेव ने वर्णन किया कि हे तपोधन ! श्रीविश्व नाथजी का क्षेत्र जो काशीपुरी है इसमें पापी और पुण्यात्माओं को श्री शिवजी समगति देते हैं और आप सदैव काशी में बास करते हैं यह बाराणसी शंकर का आनन्दवन है यद्यपि पृथ्वी में अनेकों ही तीर्थ हैं परन्तु परलोक सुधारने के लिये काशी है। यहाँ के पुण्य का प्रभाव अनन्त है जो कोई यहाँ पर एक वर्ष एक भी ब्राह्मण को बराबर भोजन देता है उसको गंगाजी की जितनी बालकायें हैं उतने वर्ष भोजन देने का फल प्राप्त होता है। जो पुरुष काशी में सदेव बास करते हैं वह शिव समान हैं इस भाँति वशिष्ट और वामदेव की वार्ता होकर दोनोंही ऋषिवर्य काशीको चलदिये। काशीके निकट आते ही जंगल में विकरालोन्मालि राक्षसके बंशकेअनेक निशाचर अस्त्रशस्त्र लिये देख पड़े और उक्त राक्षसों का स्वामी हुण्डक नामक राक्षस नेबसिष्ट और बाम

देव से वार्तालाप करके कहा कि हे राक्षस बीरों इन दोनों पुरुषों को शीघ्र मारडालो इन्हीं बसिष्ठ के पुत्र पराशर ने राक्षसघातज नामक यज्ञ करके सुकुटुम्ब हमारे पिता को मार डाला है। यह आज्ञा पायज्योंही निशाचर लोग दौड़े त्योंही श्रीशंकरजी क्रोध करके निज तीसरानेत्र खोलकर राक्षसोंको भस्म करके वशिष्ठ और बामदेवजी का कष्ट छुड़ाय अन्तर्ध्यान होगये और वे दोनों मुनि काशी में जाय तीन हजार बर्ष तक तपस्या करके शंकरजी को प्रसन्न किया। और विश्वनाथजी से निरन्तर काशीबास करनेका बरपाय निवास करने लगे। जो कोई यात्री उन मुनियों के स्थान पर जाय दर्शन करेंगे और इस कथा को सुनेंगे तो उसके काशी बास करने के जितने विघ्न हैं वे सब नाश हो जावेंगे।

इति तृतीयोऽध्यायः ।

भृगु मुनि ने कहा काशी में पापी पुरुष के मरने पर उसके मालिक यमराज नहीं होते।

परन्तु उसको कालभैरो दंड अवश्यही देते हैं काशी में एक कमेलक नामक शूद्र काशीखण्डके अनुसार नित्यही स्नान दानयात्रादि करता था। उसकेयहां क्षुधा से व्याकुल भृगुरि नामक ब्राह्मण अन्न माँगने लगा दैवबश पूर्वजन्मकृत पाप के प्रभाव से कमेलक ने ब्राह्मण को मारकर महलसे निकाल दिया कुछ समय के बाद जब वह कमेलक मरा तो उसे कालभैरो के दूतोंने क्रम से एक हजार वर्षतक घोर दुःख देकर बाद तीन हजार वर्ष पिशाचयोनिमें रख कर ताड़कमंत्र के प्रभावसे अंत में उसे मोक्ष दिया काशीमें पापकर्म करनेवाले की अयानिज जन्मलेकर पाप भोगकर मुक्ति मिलती है। इसलिये भूलकर भी काशी में मनुष्य पाप न करै। सामान्य पाप किसी कारण वश यदि मनुष्य से हो भी जाय तो नित्यही गंगा मणिकर्णिकास्नान विश्वनाथदर्शन पूजनअन्तरगृही और पंचकोशी यात्रासे छूट जातेहैं एक समय सुपर्वा नामक राजा घोड़े पर सवार होकर शिकार

करता हुआ स्त्रीगणों से युक्त एक तालाब के पास आया एक स्त्रीसे वार्तालापकिया और विदित हुआ कि राजा विशालने निजकन्या का काशीवासी राजा कुण्डधर के द्रोह से बिवाह ही करना नहीं स्वीकार किया यह वृत्त जानकर रूपवती कन्या को देखकर राजा विशालके पास गया विशाल राजा से कन्याको मांगा राजाने कहाकि मेरे बैरी काशी में राजाकुण्ड धर हैं उनको आप जीतिये तो हम कन्या काशीही में दे देवैंगे यह सुन राजा सुपर्वा ने मंत्री प्रियाश्वको संग लेकर चतुरंगणी सेन समेत कुण्डधर राजा से काशी में जाकर संग्राम किया। उस समय आकाश में देवांगणाओरअप्सरायें लाशोंको उठाकर बैकुण्ठले जानेकेलिये आईं परन्तु वृहस्पतिने उनको रोकाकि काशीमें मरनेवाले को मोक्ष मिलता है वह साक्षात् शिव स्वरूप हो जाता है तुम्हारा यह यत्न ब्यर्थहोगा यह बृहस्पति कह सबको समझा दिया और राजा सुपर्वा ने कुण्डधर को संग्राम में जीत लिया राजा

बिशाल ने सुपर्वाको काशी का तिलक करके निज चन्द्रिका नामक कन्या को शास्त्रानुसार विबाह किया। इस पुनीतपुरी में काशीबासी दरिद्रो पुरुष से बढ़कर अन्य देशों का राजा भी नहीं है। सो कथा हे मुनिवर ! मैंने आप से वर्णन किया।

एक समय याज्ञवल्क्य और जनक का सम्बाद हुआ तो याज्ञवल्क्य ने कहा कि आशुतोश श्री विश्वनाथजी की काशीपुरी में जो शरीर को त्यागता है उसे निश्चय ही मोक्ष मिलता है। काशी में ब्रह्म स्वरूप हजारों लिंग हैं तिनमें ज्योतिर्लिंग श्रीविश्वनाथ जी का है कि जिसके दर्शन से सहज ही में मोक्ष होता है। ज्ञानवापीके जल सेवन से दिव्य दृष्टि होती है। किसी समय में श्वेत देश के राजा ने एक हजार वर्ष काशी में और कैलाश में एक सौ वर्ष तप करके शंकरजी द्वारा भेजे हुये दुर्वासा ऋषि द्वारा काशोमें यज्ञ कियाथा। ऐसी वह पुनीत पुरी है। काशी ही में ब्रह्मा ने दशाश्वमेध

यज्ञ किया था और शंकर से अनेक वार्तालाप ब्रह्मा ने किया कि धन्य है काशी और काशीवासी और काशीमें प्राण त्यागनेवाले । काशी में आकर कामादि अनर्थों से खूब ही बचा रहे । एक समय नारदजी मरुत के यज्ञ में काशी माहात्म्य को सुनकर आश्चर्यित हो सूर्य नारायण से काशी माहात्म्य पूछा । सूर्य नारायण भगवानने कहा कि हे नारदजी ! तुमने यज्ञ में जो सुना है वहीसत्य है सर्वत्र तो मनुष्य का कर्म सहायक होता है परन्तु काशी में मरने के वक्त काशी यह दो अत्तर सहा-यक होकर पापी और पुण्यात्मा को ताड़क मन्त्र द्वारा मोत्त मिलता है केवल पापीको भैरवी यातना भोगनी पड़ती है । परन्तु वह नर्क द्वारमें नहींजाता है इस भांति नारद को सूर्य भगवान ने समझाया वो प्रसन्न होकर नारद निज कार्य को चले गये ।

इति चतुर्थोऽध्यायः ।

हे महर्षि ! एक समय शिव भक्त काशी में सुन

न्दक नामक राजाको विश्वर्तियज्ञ में सनत्कुमार जाने आकर काशीजी का माहात्म्य वर्णन किया कि जमुनातट पर मौन नामक मुनिके माण्डव्य और मुग्दल नामक शिष्य थे। उन शिष्यों में माण्डव्य बलिराजा के यज्ञ में गया और यज्ञ पूर्ण होकर काशीजी का माहात्म्य सुनाकर बलिराजा के साथ माण्डव्य काशीजी को आये। इतने ही के अन्दर में मौन ऋषि भी काशी में आये थे सो माण्डव्य और बलिने मौनको देखकर पूजन करके मणिकर्णिका में स्नान कर श्री बिश्वनाथजी का दर्शन करके काशी माहात्म्य पूछा तो मौन मुनिने भली भांति मोक्षपददायिनीकाशीजीकामाहात्म्यवर्णनकिया कि हेबलि? जो पुरुष काशीमें धर्म करता हुआ सदैव बास करता है उसको मोक्ष अवश्यही मिलता है और जो कोई पाप कर्म करताहै उसको अवश्य ही भैरवी यातना भोगनी पड़ती है यह कथा सुनकर बलिने शिवमूर्तिकी स्थापना काशीमें करके निज राज्यको

चले गये । श्रीकाशी जी में दिवोदास नामक राजा अपुत्र था सो तारा रानीके साथ पुत्रअर्थ निकुम्भ महाराज की एक वर्ष सेवाकी परन्तु पुत्र न मिलने से क्रोध कर निकुम्भजीका मन्दिर तुड़वा डाला तो निकुम्भ ने शाप दे दिया कि तेरे इस अन्यायसे काशी एक हजार वर्ष शून्य रहेगी प्रातः होतेही दिवोदासको मारनेके लिये तालजंधा नामक राजा आये बाद घोर संग्राम होनेसे दिवोदासको मारकर भरद्वाजके आश्रम कोचलागया और उक्तदोनों राजाओंने काशीकोशून्य करदियाराजा दिवोदासनेभरद्वाजसेसमस्तकथाकही तब भरद्वाजने काशी माहात्म्य वर्णन करके राजाको पुत्रेष्ठियज्ञ करायाप्रतर्दननामकपुत्रके उत्पन्नकरायाकि जिससे हैहय और तालजंघ राजा मारे गये और एक हजार वर्ष काशी शून्य रहा। बाद दिवोदास ने काशी में क्रिया पूर्वक बास किया तब मोक्ष को प्राप्त हुआ।

॥ इति पंचमोऽध्याय ॥

बाबूनन्दन प्रसाद द्वारा—सत्यनाम प्रेस, मैदागिन, काशी में मुद्रित ।

*पंचकोशी यात्रा *

यह यात्रा सालमें दो बार करनी चाहिये, इस यात्रासे काशी में किया हुआ पाप नष्ट हो जाता है और काशी वास का पूरा फल मिलता है।

मणिकर्णिकायेनमः।	सोमनायनमः म० तत्रैव।
मणिकर्णिकेश्वरायनमः।	विरूपाक्षायनमः म० अग्रे।
सिद्धविनायकानमः महाल मणि कर्णिकाघाट	नीलकंठायनमः म० अग्रे।
	नागनाथाय नमः म० अग्रे।
गंगाकेशवायनमः म० ललिताघाट	चामुण्डायेनमः म० अग्रे।
ललितादेव्यैनमः म० तत्रैव।	मोक्षेश्वरायनमः म० अग्रे।
जरासिंधेश्वरायनमः म०मीरघाट	वरुणक्वरायनमः म० तत्रैव।
सामेश्वरायनमः म० मानमन्दिर।	वीरभद्रेस्वरायनमः म० गांवमें।
ढालम्येश्वरायनमः म० तत्रैव।	उन्मत्तभैरवायनमः म० अगूगांव।
शूलटकेश्वरायनमः म०दशाश्वमेध	नीलवर्णायनमः म० तत्रैव।
आदिवराहेश्वरायनमः म० तत्रैव	कलिकुंडायनमः म० तत्रैव।
दशाश्वमेधेश्वरायनमः म० तत्रैव	विमलदुर्गायनमः म० अगू।
वन्दिदेव्यैनमः म० तत्रैव।	महादेवायनमः म० अगू।
सर्षस्वरायनमः म० पांडेयघाट।	नन्दिकेशगणायनमः म० अगू।
केदारेश्वरायनमः म० केदारघाट	भृगिरीटगणायनमः म० अगू।
हनुमदीश्वरावनमः म० हनुमान०	गणिप्रियायनमः म० तत्रैव।
लोर्लाकायनमः म० भदैनी।	विरुपाक्षायनमः मौरगांव।
अर्कविना कायनमः म० तत्रैव।	यक्षस्वरायनमः।
संगमेश्वरायनमः म असीसंगम	विमलेश्वराय नमः।
दुर्गाकुडायनमः प्रथमनिवासस्थान	ज्ञानदेवश्वरायनमः।
दुर्गाविनाकायनमः	अमृतस्वरायनमः।
	गन्धर्व सागराकनम भीमचण्डी
दुर्गादेव्यैनमः म० तत्रैव।	भीमचडीदेव्यैनमः तत्रैव।
विश्वकलेशेश्वरायनमम०मार्गमें	चंडिविनाकायनमः
कदमेश्वरायनमःद्वितीयनिवासस्य	
कर्दमतीर्थायनमः म० तत्रैव।	रविरक्षगंधर्वयलम तत्रैव।
कर्दमकूपायनमः म० „	नरकार्णवतारकाशवायनमः तत्रैव

एकपदागणायनमः
महा भीमायनमः आगेतलाबपर
भैरवायनमः आगेगांवमें
भैरवेवव्यासायनमः म० तत्रैव ।
भूतनाथायनमः अगू ।
सोमेश्वरायनमः ।
सिंधुसागरायनमः प्रसिद्धम् ।
कालनाथायनमः डोसगांवमे
कपर्दीश्वरायनमः अगू
कामेश्वरायमः अगू ।
गणेश्वरायनमः अगू ।
वीरभद्रायनमः चौखंडीगाँव में ।
चक्रमुखायनमः तत्रैव ।
गणनाथानयमः चौखंडीग्राम ।
देहली विनोयकम प्रसिद्ध ।
षौडशविनायकायनमः भुइलागाँव
उत्कलेश्वरायनमः तत्रैव ।
रुद्राणायनमः तत्रैव अगू ।
तथाभस्यैनमः अगू ।
रामेश्वरायनमः म० तत्रैव ।
सोभम्वरायनमः तत्रैवः
भरतेश्वरायनमः तत्रैव ।
लक्ष्मणेस्वरायनमः तत्रव ।
शत्रुघ्नेस्वरायनमः ।
नहुदेश्वरायनमः तत्रैव ।
द्यावभूमिश्वरायनमः तत्रैव ।
असंख्याततीर्थेभ्यानमः वरुणापार
असंख्यातलिंगगेभ्योनमः तत्रैव ।
देवसंघेश्वरायनमः कामारागाँवमें

पाशपाँणिविनायकायनमः लेनेमें
पृथ्वीस्वराय नमः खजुरी गांवमें
स्वर्गमग्यैनमः तत्रैव ।
यपसारावणायनमःदीनदयालपुर
वर्षकध्वजतीर्थायनमःकपिलधारा
वृषकध्वजाननमः तत्रैव ।
ज्वालानृसिंहय्यनमः वटुआगांव
संगमेश्वरायनमः तत्रैव।
सत्रविनायका तत्रैव ।
आदि केशवायनमः तत्रैव ।
प्रहलादेश्वरायनमः प्रह्लादघाट
त्रिलोचनेश्वरायनमः त्रत्रलोचन
पञ्चगंगायैनम् प्रसिद्धम् ।
बिंदुमाधवायनम्: प्रसिद्धम् ।
वसिष्ठवामदेवाभ्यानमः संकटाघाट
यवतेश्वरायनमः तत्रैव ।
महेश्वरायनमः मणिकर्णिका
सप्तवरणविनायकायनमः ब्रह्मनाल
षट्पञ्चशद्विनायकेभ्योनमः तत्रव ।
मणिकर्णिकायैनमः प्रसिद्धम् ।
विश्वेश्वरायनमः प्रसिद्धम् ।
मुक्तिमण्डपायनमः प्रसिद्धम् ।
विघ्नंनम् प्रसिद्धम् ।
दण्डपाणयेनमः ।
ढुंढिराजायनमः ।
भैरवायनः ।
आदित्यायनमः ।
मोदादिपञ्चविनायकेभ्योनमः ।
इति पञ्चकोशीयात्रा सम्पूर्णम् ।

काशी जी का बना शुद्ध यज्ञोपवी जनेउ।

जनेऊ मोटा नं० १	।≡) कोड़ी	जनेऊ गोलगांठ	।-) कोड़ी
जनेऊ मोटा नं० २	।-) कोड़ी	जनेऊ विलागांठ	।-) कोड़ी
जनेऊ महीन	।-) कोड़ी	जनेऊ ब्रह्मगांठ	॥≡) कोड़ी

किस्सा कहानी।

अलीबाबा चालीस चोर	-)	सिहांसन बत्तीसी	।-)
रात का सपना	-)॥	छबीली भठियारी	=)॥
अचम्भे का बच्चा	-)॥	जान न पहिचान बड़ी बीबी सलाम	-)।
रात की वारदात	=)	साढ़ेतीनयार ८भाग सचित्र	।॥)
अफिमची का किस्सा	)॥।	तोता मैना ८ भाग सचित्र जिल्द	॥)
रात की मुलाकात	-)॥	हातिमताई बड़ा किस्सा सचित्र	॥-)
लैला मजनू सचित्र	=)	चहार दरवेश सचित्र	॥)
अलादीन किस्सा	=)	चमेली गुलाब	।)
लतीफे बीरबल	)॥।	बैताल पचीसी	।)
अक्किल बहार	=)॥	डल्ला किला	=)
सिपाही जादा	-)।	रँगीली मालीन दोनोंभाग	।=)
एक रातमें २० खून	-)।	केसर गुलाब चारो भाग सचित्र	।-)
सारंगा सदाबृज ४ भाग सचित्र	।-)	फिसाने अजायब सचित्र	।-)
गुल सनोवर सचित्र	=)		
सारंगा सदाबृज छोटा	)॥।		
गुल बकावली	।)		

पता—गुल्लू प्रसाद केदारनाथ बुकसेलर,
कचौड़ी गली, बनारस सिटी।

सुलेमानी प्रेस, काशी